Sem-4- Paper-9b

फ्रेडरिक विल्हेल्म आगस्ट फ्रोबेल के शिक्षा दर्शन का सारांश (1)

Summary of Educational Philosophy of Friedrich Wilhelm August Froebel)

(1) फ्रोबेल का जन्म जर्मनी में हुआ था। बाल्यावस्था में ही माँ का देहान्त हो गया।
(2) ईश्वर सर्वव्यापी है। तथा सृष्टि का कर्त्ता है। अतः ये सर्वेश्वरवादी थे।
(3) ये मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति मानते थे।
(4) आत्मज्ञान ही मनुष्य का सर्वोत्तम लक्ष्य है।
(5) फ्रोबेल के अनुसार सृष्टि के जड़ पदार्थों एवं जीव-जन्तुओं के क्रमिक विकास को जानना ही ज्ञान है।
(6) मनुष्य किसी भी प्रकार का ज्ञान अपने अन्तःशक्तियों द्वारा प्राप्त कर सकता है।
(7) ये शाश्वत नैतिक नियमों एवं मूल्यों में विश्वास करते थे।
(8) नैतिकता सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है।
(9) सत्यं शिवं सुन्दरम् शाश्वत मूल्य हैं।
(10) ये पेस्टालॉजी के प्रशिक्षण विद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त किया था।
(11) इन्होंने कहा कि "शिक्षा वह - प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है।
(Education is a process by which a child makes its internal external)
(12) ये अनेकता में एकता के सिद्धान्त को मानते थे।
(13) शिक्षा के उद्देश्यों में इन्होंने बताया जो निम्नलिखित हैं—
(a) मनुष्य को अपने दैवीय स्वरूप (आत्मा) और संसार की आत्मिक एकता का ज्ञान एवं अनुभूति कराना।
(b) बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास करना।
(c) बच्चों का सामाजिक विकास करना, अर्थात् उन्हें समाजोपयोगी नैतिक व्यवहार में प्रशिक्षित करना।
(d) बच्चों का चारित्रिक एवं नैतिक विकास करना।
(e) बच्चों में दैवीय तत्त्व का विकास करना, उन्हें पावन जीवन की ओर प्रवृत्त करना।
(14) पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों को बताया—
(a) पाठ्यचर्या मनुष्य के विकास के सिद्धान्त पर आधारित होनी चाहिए।
(b) पाठ्यचर्या के विषय एवं क्रियाएँ बालकों के शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुसार होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(c) पाठ्यचर्या के समस्त विषय एवं क्रियाओं में आपसी सम्बन्ध होना चाहिए तथा एकता होनी चाहिए। (2)

(15) इन्होंने 04 से 08 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा पर विचार व्यक्त किये हैं और उन्हीं के लिए पाठ्यचर्या प्रस्तुत की है जो निम्नलिखित है, खेलकूद, व्यायाम, भाषा ज्ञान, कला एवं संगीत, प्रकृति निरीक्षण, इतिहास एवं भूगोल, विज्ञान, गणित एवं धार्मिक शिक्षा। इन्होंने बचपन को खेल की अवस्था माना अतः इस स्तर पर बच्चों को स्वतंत्र रूप से विकास का अवसर प्रदान करना चाहिए दूसरी अवस्था बाल्यावस्था है इस स्तर पर बच्चों को विभिन्न व्यवसाय सीखने का अवसर देना चाहिए। और तीसरी अवस्था युवावस्था है, इस स्तर पर युवकों को सामाजिक जीवन की शिक्षा देनी चाहिए।

(16) फ्रोबेल का कथन है कि, "शिक्षण का उद्देश्य, मनुष्य के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना नहीं वरन् उसमें निहित शक्तियों को प्रकट करना है।"

(17) फ्रोबेल ने शिक्षण पद्धति में निम्नलिखित सिद्धान्तों पर बल दिया-

(a) आत्मक्रिया (Self Activity) :- फ्रोबेल का कथन है कि "अनन्त दैवीय सिद्धान्त मनुष्य में स्वतंत्र स्वयं क्रिया की माँग करता है" - फ्रोबेल का दूसरा कथन है कि "बालक स्वतः प्रेरणाओं और भावनाओं को पूर्ण करने के लिए स्वयं अपने मन से सक्रिय होकर काम करता है।"

(b) सामाजिक क्रियाएँ (Social Activities) :- फ्रोबेल का मानना था कि आत्मक्रिया की अनुभूति सामाजिक वातावरण में ही सम्भव है। अर्थात् बालक आत्मक्रिया समाज में ही कर सकता है।

(c) खेल द्वारा सीखने का सिद्धान्त (Principle of Learning by Play-Way Method) :- उन्होंने शिक्षण करते समय खेल विधि को बच्चों के स्वाभाविक रुचि के अनुरूप माना।

(d) एकता का सिद्धान्त (Principles of Unity) :- ये बच्चों को अनेकता में एकता की अनुभूति कराना चाहते थे, अतः उनके लिए विभिन्न उपहारों का खोज किया था जो शिक्षण विधि में मदद करता था।

(e) स्वतंत्रता का सिद्धान्त (Principles of Freedom) :- फ्रोबेल बालकों के स्वाभाविक विकास में स्वतंत्रता को आवश्यक माना।

Scanned with CamScanner

(5) ज्ञान को अन्दर से बाहर निकालने का सिद्धान्त :- (Principle of Making Internal External) :- फ्रोबेल का मानना था कि मनुष्य के अन्दर बीज रूप में ज्ञान रहता है शिक्षक या वाह्य वातावरण उसे विकसित होने में सहयोग करता है। (3)

(18) किंडर गार्टन प्रणाली में आत्माभिव्यक्ति के साधन :- फ्रोबेल ने तीन साधनों को बताया (1) गीत (Song) (2) गति (Gesture) (3) रचना अर्थात् इस प्रकार उनका मानना था कि बालक किसी कहानी को सुनकर उस पर कोई गीत गा सकते हैं, गीत गाते समय अभिनय कर सकते हैं तथा उससे सम्बन्धित चित्र बना सकते हैं।

(19) किंडर गार्टन प्रणाली में प्रयोग की जाने वाली सामग्री या साधन :- बच्चों को आत्मक्रिया के लिए अवसर प्रदान करने तथा उन्हें खेल द्वारा शिक्षा देने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों तथा साधनों का निर्माण किया जो निम्नलिखित है — (a) कहानियाँ (2) खेल (3) मातृखेल एवं शिशु गीत (Mother's Play and Nursery Song) (4) उपहार (Gifts) (5) व्यापार (occupation)

(20) किंडर गार्टन प्रणाली का कार्य योजना :- (Work Plan of Kindergarten System) इस प्रणाली में स्कूल के दैनिक कार्यों को दो पारियों में बाँटा गया था। प्रथम पारी में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा, इन्द्रिय प्रशिक्षण, लिखना - पढ़ना और अंकगणित की शिक्षा दी जाती थी। दूसरी पारी में अन्य विषयों एवं क्रियाओं की शिक्षा दी जाती थी। इस प्रणाली में भिन्न-भिन्न विषयों का शिक्षण एवं क्रियाओं का प्रशिक्षण भिन्न-2 विधियों से दिया जाता था जो निम्नलिखित है — (a) धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा (b) इन्द्रिय प्रशिक्षण (c) पढ़ना लिखना सिखाना (d) अंकगणित की शिक्षा (e) खेलकूद, शारीरिक व्यायाम और संगीत की शिक्षा (f) अन्य विषयों का शिक्षण

(21) अनुशासन :- ये दमनात्मक अनुशासन के स्थान पर आत्मानुशासन पर बल देते थे। ये बच्चों के स्वतंत्रता के समर्थक थे लेकिन रूसो के तरह से अति मान्तीत स्वतंत्रता के समर्थक नहीं थे।

(22) वे शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र मानते थे। वे यह मानते थे शिशुओं को अपने विकास के लिए स्वतंत्र अवसर देना चाहिए। फ्रोबेल का कथन है; "हमें बच्चों के लिए जीवित रहना चाहिए।" (Let us live for our children) फ्रोबेल चंचलता को बच्चे का विशिष्ट गुण मानते थे। इनका मानना था कि बच्चों में भी प्रेम, क्रोध, हर्ष, विवेक होता है।

(23) फ्रोबेल की शिक्षा प्रणाली में बालक शिक्षा का केन्द्र है न कि शिक्षक परन्तु शिक्षक का उत्तरदायित्व कम नहीं है। फ्रोबेल का कहना है कि विद्यालय रूपी बाग में, शिक्षक रूपी माली, शिक्षार्थी रूपी पेड़-पौधों के उचित विकास के लिए उत्तरदायी है। फ्रोबेल इस स्तर पर केवल महिला शिक्षिकाओं की नियुक्ति करने के पक्ष में थे। फ्रोबेल के अनुसार शिशु शिक्षिकाओं को बहुत ही संवेदनशील एवं मातृतुल्य व्यवहार करने वाली होनी चाहिए। शिक्षिकाओं को बच्चों के स्वाभाविक विकास में सहायक होना चाहिए।

(24) फ्रोबेल ने अपनी शिक्षा संस्था को 'किण्डरगार्टन' (Kindergarten) नाम से पुकारा। यह जर्मन भाषा का शब्द है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है- 'Kinder' अर्थात 'बालक', 'Garten' अर्थात उद्यान। इस प्रकार 'किण्डरगार्टन' शब्द का अर्थ है — Children's Garden अर्थात 'बालोद्यान'। फ्रोबेल ने पौधे की तुलना बालक से और 'माली' का शिक्षक से की है। जिस प्रकार माली उद्यान के पौधों का देखभाल करके उसकी स्वाभाविक वृद्धि एवं विकास में सहायता करता है, उसी प्रकार शिक्षक विद्यालय में उपयुक्त वातावरण का निर्माण करके बालक के स्वाभाविक विकास में सहयोग करता है।

(25) रस्क (Rusk) ने फ्रोबेल का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि, "यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पूर्व-विद्यालय आयु के बालकों के प्रशिक्षण के प्रति ध्यान आकर्षित करने तथा एक नवीन प्रकार की शिक्षा संस्था स्थापित करने का श्रेय फ्रोबेल को है।"

Scanned with CamScanner

किण्डरगार्टन प्रणाली के गुण (5)
(Merits of Kindergarten System)

(1) यह पद्धति बालक का वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास करती है।

(2) यह पद्धति सामूहिक क्रियाओं पर बल देकर बालक में प्रेम न्याय, सहयोग, सत्यता, उत्तरदायित्व आदि का विकास करती है।

(3) यह प्रणाली 'करके के सीखने' के सिद्धान्त पर बल देकर बालक में क्रियाशीलता, आत्म विश्वास आदि गुणों का विकास करती है।

(4) यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि यह बालक की प्रवृत्तियों का दमन न करके खेल, गीत, रचना अभिनय द्वारा व्यक्त करने का अवसर देती है।

(5) यह खेल को शिक्षण का आधार मानती है, क्योंकि खेल बाल्यकाल की प्रमुख क्रिया है।

(6) यह शिक्षक एवं छात्र में घनिष्ठ और व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करती है शिक्षिका मित्र एवं सहायक के रूप में छात्रों का पथ-प्रदर्शन करता है।

(7) यह पद्धति शारीरिक श्रम और हस्तशिल्प को महत्व देती है जिसे गाँधी ने भी महत्त्व दिया।

(8) यह बालक के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास की एकता पर बल देती है।

(9) इसमें शिक्षा को जीवन का अंग माना जाता है।

(10) इसमें विभिन्न प्रकार के खेलों एवं उपहारों एवं व्यापारों द्वारा बालक के ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित किया जाता है।

(11) इसमें बालक को स्वतंत्र वातावरण में शिक्षा देकर उसका स्वाभाविक विकास किया जाता है।

(12) इसमें ~~मा~~ महिला शिक्षिकाओं को पढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है।

(13) इसमें विद्यालय को आकर्षण के केन्द्र के रूप में सजाया जाता है ताकि बालक आकर्षित होकर स्कूल आ सकें।

(14) इसमें बालकों में सौन्दर्य भावना का विकास होता है।

किण्डरगार्टन प्रणाली के दोष
(Demerits of Kindergarten System)

1. इसमें आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया जाता है।
2. खेल, उपहार एवं व्यापारों की अधिकता रहती है।
3. कुछ उपहार अनुपयुक्त है।
4. ज्ञान एवं क्रियाओं में एकीकरण का अभाव है।
5. इस प्रणाली का बच्चों का खेल-गीत अरुचिकर है।
6. आत्मनिर्भरता का अभाव दीखता है क्योंकि सामूहिकता तो विकसित हो जाती है परन्तु वैयक्तिकता विकसित नहीं हो पाती।
7. यह प्रणाली व्ययसाध्य है।

निष्कर्ष :- (Conclusion)

फ्रोबेल ने शिक्षा जगत में शिशुओं एवं बालकों के लिए एक नवीन विचार एवं प्रणाली को जन्म दिया अर्थात शिशुओं के लिए शिक्षा की एक विस्तृत योजना प्रस्तुत की। किण्डरगार्टन प्रणाली के माध्यम से बालकों की शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। अतः हम कह सकते हैं कि शिशु शिक्षा के प्रति सबसे अधिक फ्रोबेल ने ही विश्व का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने क्रियात्मक शिक्षा, खेल द्वारा शिक्षा, रुचि के अनुसार कार्य, रचनात्मक शिक्षा, उपहार, व्यापार आदि प्रमुख सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जो मनोवैज्ञानिक हैं। फ्रोबेल भी महान शिक्षाशास्त्री रूसो के शिक्षा दर्शन से प्रभावित होकर शिशु शिक्षा पर विचार किया परन्तु रूसो के कमियों को दूर किया। महान महिला शिक्षाशास्त्री मान्टेशरी, फ्रोबेल के सिद्धान्तों से ही प्रभावित होकर देश-विदेश में मान्टेशरी स्कूलों की स्थापना की। जो आज भी चल रहे हैं तथा शिशु शिक्षा को उनके अनुकूल शिक्षा दे रहे हैं। यदि हम फ्रोबेल के शिक्षा दर्शन पर सांगोपांग विचार करें तो इनका शिक्षा दर्शन शिशु एवं बालकों के लिए अत्यधिक उपादेय है। फिर भी मूल्यांकन करने पर हम पाते हैं किण्डरगार्टन प्रणाली में प्रयोग की जाने वाली सामग्री, उपहार इत्यादि अन्यान्य स्कूलों में

Scanned with CamScanner

सुधार करके अपने-अपने तरीकों से विकसित किया उनके तरीके आज के परिवेश के लिए हूबहू लागू करना सही नहीं है परन्तु आधार वही होना चाहिए।

आज विश्व विभिन्न संकटों से गुजर रहा है जैसे भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यों का क्षरण, कोरोना संकट इत्यादि अतः इन संकटों को दूर करने में आध्यात्मिक शिक्षा अधिक सहायक हो सकती है इसप्रकार फ्रोबेल ने बालकों में आध्यात्मिक शिक्षा का विकास बचपन से ही करने का प्रयत्न किया। गाँधी का शिक्षा दर्शन तथा बेसिक शिक्षा योजना भी फ्रोबेल से अधिक प्रभावित था। फ्रोबेल के अनुसार विद्यालय आकर्षण का केन्द्र होना चाहिए जहाँ बालक घर से जाने में प्रसन्नता का अनुभव करें। इस बात को आज सभी शिशु एवं बाल विद्यालय अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। उनका मानना था कि बच्चा को बच्चा मानकर ही शिक्षा दी जाय उनको प्रौढ़ों बनाने के लिए शिक्षा न दी जाय अर्थात् प्रौढ़ता को आदर्श मानकर शिक्षा देना बालक व शिशु को नुकसान पहुँचाना है। इस विचार को आज सर्वमान्य माना जा रहा है। इसप्रकार विश्व के अधिकांश देशों में किण्डरगार्टन प्रणाली के शिशु व बाल विद्यालयों का होना और उसमें खेल विधि द्वारा शिक्षा देना फ्रोबेल के महानता को सिद्ध करता है।

अंत में हम कह सकते हैं कि फ्रोबेल के शिक्षा को पूर्णरूपेण आज के परिवेश में लागू करना न्यायसंगत नहीं होगा क्योंकि समयानुसार, परिस्थितियों के मांग के अनुसार शिक्षा में भी परिवर्तन करना पड़ता है क्योंकि आज की परिस्थिति फ्रोबेल के समय की परिस्थिति नहीं है। आज हम कम्प्यूटर, इण्टरनेट, मोबाइल, ऑनलाइन क्लास, अन्यान्य वेबसाइट, ~~शिक्षण सहायक~~ एप इत्यादि का प्रचलन बढ़ा है। अतः इन सामग्रियों के हानि-लाभ को देखते हुए हमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुसार फ्रोबेल के शिक्षा दर्शन में भी सुधार करना पड़ेगा परन्तु बालकों को शिक्षकों द्वारा दमन, कठोर आचरण, मार-पीट, अभिभावकों का बच्चों पर दबाव, बोझिल व डरावना वातावरण, कठोर एवं बोझिल पाठ्यचर्या से निकालकर प्रेम, स्वाभाविक शिक्षा, अपने गति से शिक्षा, मातृतुल्य शिक्षिकाओं से शिक्षा, गीत, अभिनय एवं रचना के माध्यम से शिक्षा, स्कूल को बालोद्यान (kinder-garten) मानना आज भी प्रासंगिक बना हुआ है तथा भविष्य में भी प्रासंगिक बना रहेगा।

Scanned with CamScanner